आधुनिक युग का संकट और औरत की स्थिति

कहते हैं अगर यह देखना हो कि कोई समाज या राष्ट्र तरक्की कर रहा है या नहीं, तो उस समाज या राष्ट्र में औरत की स्थिति को देख लेना चाहिए। समाज या राष्ट्र की स्थिति का पता चल जाएगा। और यह बात सही भी है। कोई भी समाज अपनी महिलाओं को हाशिये पर रख कभी आगे नहीं बढ़ सका है। एक समय था जब भारत में औरतों की स्थिति वर्तमान से कहीं बेहतर थी। जहाँ वह अपने वर चुनने के लिए स्वयंवर रचाती थी। जहाँ वह पुरुषों के साथ युद्धों में भाग लेती थी। उसे शास्त्रार्थ में पराजित करती थी। यह देश मैत्रेयी, गार्गी, विद्योतमा, रानी लक्ष्मीबाई का देश था। आधुनिक युग का सबसे बड़ा संकट तो यही है कि यह युग जितना विकसित होता जा रहा है, महिलाएं उतनी ही हाशिये पर धकेल दी जा रही हैं। हम इसकी एक बानगी इस लेख में देने का प्रयास करेंगे।

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो।
विश्वास रजत नग पग तल में।।
पीयूष स्रोत सी बहा करो।
जीवन के सुंदर समतल में।।'

हिंदी के महाकवि जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ जिस नारी की छवि हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं, वो शायद ही हमारे तथाकथित आधुनिक समाज में कहीं दिखाई दे। जिस समाज में औरत और आदमी के लिए मापदंड अलग हों; वहाँ हम कैसे एक औरत की समानता, उसके अधिकार, उसकी स्वतंत्रता को शब्दों और विचारों की एक अंधी गली में धकेलने में कामयाब हो गये हैं? क्या यह सिर्फ पितृसत्तात्मक समाज होने भर से हुआ या हमारी नसों और नस्लों में स्त्रीविरोधी संस्कार कूट-कूट कर भरे गये थे? स्त्री विरोधी ये संस्कार आज हमें अपने घर, समाज, राजनीति, हर जगह देखने को मिलते हैं। एक पिता अपने पुत्र के कॉलेज से पिकनिक पर जाने पर सवाल नहीं करता लेकिन वही अपनी बेटी के जाने पर उसके सामने सवालों की झड़ी लगा देता हैं। आपका भाई देर से घर लौटता है तो कोई हलचल नहीं होती, लेकिन ४-५ बजते ही हमारी चिंताएं हमारी निष्ठाओं में तब्दील हो आधुनिक समाज में औरत की सुरक्षा के नाम पर एक और बंध बाँधने का काम करती है।

आधुनिक समय में हम औरतों की समाज में भूमिका पर नहीं बल्कि उसकी सुरक्षा और स्थिति पर चर्चा करने लग जाते हैं। यह अपने आप में विडंबनापूर्ण स्थिति है। बेहतर होता अगर समाज निर्माण में उसकी भूमिका पर चर्चा-परिचर्चा और विवेचन किया जाता। ऐसे में भी हमारे सामने जो उदाहरण पेश किए जाते हैं, वो उन ख़ास महिलाओं के होते हैं, जो इतिहास और राजनीतिक रूप से काफी सबल थीं। हम उन स्त्रियों की स्थिति के मार्फत अपने समाज की प्रत्येक महिला का सामान्यीकरण कर देते हैं। मसलन झाँसी की रानी का उदाहरण देते वक्त एक वर्ग महिलाओं की बहादुरी की गाथा गाता दिखाई देता है। निश्चित ही महिलाएं आधारिक रूप से बहादुर होती हैं, लेकिन क्या यह सही है कि झाँसी की रानी के समय की अधिकतर औरतों की दशा झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह हो। हम जानते हैं, ऐसा नहीं है लेकिन यह भारतीय समाज की विडंबना ही कही जाएगी कि हम अपनी कमजोरियों पर चर्चा करने की अपेक्षा उससे बचकर निकल जाना चाहते हैं। कहते हैं किसी देश की समृद्धि या विकास का पता उसकी राष्ट्रीय आय या प्रति व्यक्ति आय से नहीं चलता अपितु उस देश या समाज में महिलाओं की स्थिति और भूमिका से

ISSN 2581-9917

चलता है। यही कारण है कि जिसे हम ग्रेट ब्रिटेन कहा करते थे और जिसके साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था, वह भी अपनी महिलाओं को सम्मान न देने के कारण आज तक आलोचना का केंद्र-बिंदु बना हुआ है।

पौराणिक और प्राचीन काल का इतिहास उठा कर देख लें। स्त्री, पुरुष के साथ युद्ध में जाया करती थी। कैकेयी ने दशरथ से दो वचन उनकी रक्षा करने की एवज में रणभूमि में ही मांगे थे। चाणक्य ने चंद्रगुप्त की निजी रक्षा का दायित्व पुरुषों की अपेक्षा औरतों को दिया था। प्राचीन और पौराणिक काल में आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे जो आज स्त्री की महत्ता और समाज के निर्माण में उसकी भूमिका को दर्शाते हैं। वैदिक काल से आज तक स्त्री की स्थिति पर दृष्टिपात करने से तस्वीर और साफ हो सकेगी।

वैदिक युग सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से स्त्रियों के लिये स्वर्ण युग था। उनकी योग्यता, प्रतिभा, स्पष्टवादिता, ओजस्विता ने नए मानदण्ड स्थापित किये थे। यह ऐसा समय था जब स्त्रियों की स्थिति पुरुषों के समतुल्य नहीं बल्कि उनसे भी ऊपर थी। उनके बिना यज्ञ अपूर्ण समझा जाता था। यज्ञों में भी उसे सर्वाधिकार प्राप्त था। वैदिक युग में पिता, पुत्रियों पर भी उतना ही ध्यान देते थे जितना पुत्रों पर। उन्हें प्रत्येक विद्या सीखने का हक था। उनका व्यवहार भी केवल घरों तक सीमित न था, अपितु उन्हें मेल-मिलाप के लिये माहौल मिलता था। उस युग में मैत्रेयी, गार्गी और अनुसूया नामक विदुषी स्त्रियाँ शास्त्रार्थ में निपुण थीं - 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' उक्ति वैदिक काल में निश्चित ही सत्य उक्ति थी। उस समय सुशील स्त्री होने के साथ-साथ उसके सुसंस्कृत और सुशिक्षित होने को उसका संस्कार माना जाता था। उसे अपने भाई एवं पति की ही भाँति सभी अधिकार प्राप्त थे।

उत्तर वैदिक युग, वैदिक युग के पश्चात् का युग स्त्रियों की इस दशा को बरकरार न रख सका। उसकी स्थिति में गिरावट आई। उसकी स्वतंत्रता और अधिकारों को सीमित किया जाने लगा। धर्मसूत्र में बाल-विवाह का निर्देश दिया गया, जिससे स्त्रियों की शिक्षा में बाधा पहुंची और उनकी स्वतंत्रता एवं शक्ति को संकुचित करने के लिए तथाकथित ज्ञानियों ने कहा कि उसे पिता, पति और पुत्र के अंतर्गत अपने व्यवहारों को सीमित रखना चाहिए-

"पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्रश्च स्थाविरे भावे, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति।।"

अब वह राजमहलों की शोभा मात्र रह गयी। उस समय में भी आम औरतें रनिवासों की औरतों की तुलना में ज्यादा स्वतंत्र थीं। लेकिन तब भी उच्चवर्ग की महिलाएँ घर की चारदीवारी में कैद हो गयीं, पढ़ने-लिखने व वेदों का ज्ञान असंभव हो गया और उनके लिए धार्मिक संस्कारों में भाग लेने की मनाही हो गयी। बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन हो गया और वैदिक युग की तुलना में उत्तर वैदिक काल में स्त्री की दशा और भी दयनीय हो गयी। रही सही कसर स्मृति ग्रंथों ने पूरी कर दी।

स्मृति युग में स्त्रियों की स्थिति पहले से ज्यादा बदतर हो गयी, कारण यह था कि बाल-विवाह तथा बहुपत्नी-प्रथा का प्रचलन और बढ़ गया। इस युग में विवाह की आयु घटाकर १२-१३ वर्ष कर दी गयी। विवाह की आयु घटाने से शिक्षा न के बराबर हो गयी, उनके समस्त अधिकारों का हनन हो गया। उन्हें जो भी सम्मान इस युग में मिला वह सिर्फ माता के रूप में, न कि पत्नी के रूप में। स्त्रियों का परम कर्तव्य पति जैसा भी हो उनकी सेवा करना था। विधवा पुनर्विवाह पर भी कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

मध्यकाल आते-आते भारत की राजनीतिक स्थिति बहुत हद तक बदल गयी। मुस्लिम आक्रमणकारियों के आने के बाद भारत में पर्दाप्रथा ने अपने पैर पसारे। मनीषियों ने हिन्दू धर्म की रक्षा, स्त्रियों के मातृत्व और रक्त की शुद्धता को बनाये रखने के लिए स्त्रियों के सम्बन्ध में नियमों को कठोर बना दिया। ऊँची जाति में शिक्षा समाप्त हो गयी। विवाह की आयु घटकर ८-९ वर्ष हो गयी। विधवाओं का पुनर्विवाह पूरी तरह समाप्त हो गया और सती-प्रथा चरम सीमा पर पहुँच गयी। इस युग में केवल स्त्रियों के संपत्ति के सम्बन्ध में सुधार हुआ। उन्हें भी पिता की संपत्ति में उत्तराधिकार मिलने लगा।

यह काल वही है जहाँ 'जिह घर देखी सुंदर कन्या तिह घर जाय धरी तलवार' जैसे कथन प्रचलित थे। राजनीतिक परिवर्तनों ने समाज में तेजी से बदलाव करने शुरू किये और कहना न होगा कि इन बदलावों की कीमत पर औरतों को रखा गया। पुरुषों ने इसमें भी अपने लिये आश्रय तलाश लिया। जोधाबाई जैसी रानियाँ इसका एक उदाहरण कही जा सकती हैं। मध्यकाल में सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा-पुनर्विवाह पर रोक, देवदासी, पर्दाप्रथा जैसी विकृतियों ने समाज में महिलाओं की स्थिति को दयनीय बना दिया। महिलायें सिर्फ घरों की शोभा बन कर चारदीवारी में कैद हो गईं। पति की परमात्मा से भी बढ़कर सेवा करना तथा बच्चों का पालन-पोषण करना उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या बन कर रह गईं।

पितृसत्तात्मक समाज में औरत को महाभारत और रामायण के युद्ध का मूल कारण माना गया। पुरुषों ने औरत को कटघरे में खड़ाकर निर्णायक की भूमिका के लिये स्वयं को तैयार करना शुरू किया। जिसमें वे काफी हद तक सफल रहे और औरत को धर्म एवं संस्कारों के नाम पर एक लक्ष्मण रेखा के भीतर रहने के लिये बाध्य किया गया। पितृसत्ता ने यह काम भी औरतों के हाथों पूरा किया। मसलन शादी के बाद विधवा हो जाने पर केश न रखने, रूखा सूखा खाने, चप्पल न पहनने जैसे बंधन लगाए गये। एक पुरुष कई विवाह कर सकता था पर एक औरत के लिये पति को परमेश्वर बताया गया। एक लंबी प्रक्रिया के बाद एक औरत की मानसिकता इस तरह की बनाई गयी कि वह भी स्वयं को बंधनों में ही आजाद समझने लगी। उसे पर्दे में रहना भाने लगा। पुनर्विवाह पाप लगने लगा। शिक्षा तक का अधिकार उससे छीना गया। फिर एक नये जागरण का उदय हुआ। परतंत्र होने के बावजूद कुछ स्वतंत्र मस्तिष्कों ने स्त्री की शिक्षा के लिये दरवाजें खोले। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने २५ बालिका विद्यालयों की स्थापना की। राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा और बालविवाह के विरुद्ध कानून बनवाने के लिये जद्दोजहद की।

औरत को एक वस्तु के रूप में तब्दील करने में बाजार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। १९९० के बाद पनपे उदारीकरण और वैश्वीकरण के दौर ने इसे और बढ़ाया। यह बड़ा दिलचस्प है कि सन् १९९४ में विश्व सुंदरी के तीनों ताजों पर भारत का कब्जा हुआ, जिसे भारत बड़े दंभ की नज़र से देख रहा था। वह दरअसल भारत में सौंदर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर बाजार को आपके घर तक पहुँचाने का जरिया मात्र था। मसलन एक फलां कंपनी को अपने शैंपू बेचने के लिये एक सौंदर्य आइकॉन की जरूरत थी। वह उसे ऐश्वर्य राय आदि के रूप में मिल गया था। हालत यह हुई कि जब काफी कम समय में ब्यूटी उत्पादों ने यहाँ कि उच्च वर्ग की महिलाओं (साथ ही पुरुषों) तक अपनी पैठ बना ली तब पुनर्वास कॉलोनियों यहाँ तक की झुग्गी झोपड़ियों में ये उत्पाद (शैंपू आदि) सैशे के रूप में प्रस्तुत किये गये। एक रुपये के क्लिनिक प्लस ने हमारे समाज में यह गलतफ़हमी भरने की कोशिश की यदि शैंपू लगाया तो लाइफ झिंगा ला ला।

ISSN 2581-9917

बिल्कुल संभव है कि आपको लगे कि हम भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका पर बात करते करते बाजारवाद और उसकी तकनीक पर बात क्यों करने लगे। तो कहना न होगा कि उदारीकरण के बाद समाज और किसी देश की भूमिका बाजारवाद के संकट से आजाद नहीं, निश्चित ही इसमें औरत को एक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाना अहम है। आप यदि विज्ञापनों का एक संक्षिप्त आंकलन करने की कोशिश करें तो पाएंगे कि गाड़ी का विज्ञापन हो या बाइक का, शेविंग ब्लेड का विज्ञापन हो या पुरुष अंडर वियर का, यहाँ तक कि आइसक्रीम और चॉकलेट जैसे बच्चों के उत्पादों के लिये जिस तरह से भारतीय सिने तारिकाओं और सुंदरियों का इस्तेमाल किया जा रहा है, वो बाजार रूपी एक नवसाम्राज्य की आहट की सिर्फ सूचना नहीं देता बल्कि आपके दरवाजों पर बार-बार दस्तक देता है और दुर्भाग्य यह है कि आप चाहें या न चाहें, आप चाहे स्वागत करें या अपने दरवाजों पर सैंकड़ों कुंडियाँ लगा लें, यह बाजार अपने उत्पादों के रूप में आपके बेडरूम तक पहुँच जाता है और आप कुछ नहीं कर पाते। मैं अक्सर सोचता हूँ। वैलेंटाइन्स डे, चॉकलेट डे का चलन पिछले पंद्रह बीस सालों में इतना क्यों बढ़ गया। यही नहीं, शिव के भक्तों या कांवड़ियों की बयार एकाएक कैसे आपकी सड़कों पर निकल आई। जाहिर है बाजार चाहता है कि यह बयार और बढ़े।

वैलेंटाइन्स डे पर आप अपनी महिला मित्र या पत्नी के पास जाते हैं, आप बताते है कि आप उन्हें बेहद चाहते हैं। वह नहीं मानती क्योंकि आपने न तो उसे गुलाब दिया और न ही कोई गिफ्ट। हम यहाँ महिलाओं का सामान्यीकरण नहीं कर रहे बल्कि वर्तमान समय में हमारे दृष्टिकोण और महिलाओं के प्रति हमारे रवैये पर सूचनात्मक टिप्पणी देने का प्रयास मात्र कर रहे हैं।

हम पुरुषों ने अपने लिये एक सुखद माहौल तब भी बनाये रखा था जब हमने कहा था कि महिलाएँ घर की शोभा होती हैं। या 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' कहा था। जब एक माँ अपनी बेटी के रिश्ते के लिये आए लड़के वालों के समक्ष अपनी बेटी को यह कहकर प्रस्तुत करती है कि हमारी बेटी तो बिल्कुल 'गाय' है। तब इन वाक्यों से आप आज के समाज में औरतों की स्थिति को बेहतर समझ सकते हैं।

हमारे समाज और संसद में आज भी ऐसे वाक्य सुने जा सकते हैं जब औरतों के बलात्कार के लिये उनके कपड़ों या देर तक काम करने को मूल कारण बताया गया। हम किस तरह का समाज बनाना चाहते हैं। आज भी बेटी को शादी के बाद उसके पिता की संपत्ति का भागीदार बनाने में उसके भाई और रिश्तेदारों को परेशानी होती है। हम एक ऐसे आधुनिक समय में उपरोक्त बातों को कहने का जोखिम उठा रहे हैं, जहाँ एक स्त्री को आज भी पराया धन कहकर संबोधित किया जाता है। यह एक ऐसा समय है कि अगर आपकी पत्नी थककर घर आई है और आप उसके पैर दबाने की कोशिश मात्र कर लें तो आपके घरवाले और पड़ोसी आपको 'जोरू का गुलाम' जैसी विरुदों से विभूषित कर देंगे। यह संकट सिर्फ स्त्रियों के लिये नहीं है, बल्कि यह संकट उन पुरुषों के लिये भी है जो स्त्रियों के पक्ष में और उनके अधिकारों के लिये अपनी आवाज बुलंद करते हैं।

डॉ. तरुण गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
शिवाजी महाविद्यालय, नई दिल्ली।